1

आईए

नहजुल बलाग़ा

से सीखते हैं

जवाद मोहद्दिसी

अनुवादः अब्बास असग़र शबरेज़

आईए

नहजुल बलाग़ा

से सीखते हैं

जवाद मोहद्दिसी

अनुवादः अब्बास असग़र शबरेज़

Contents

पहली बात

आज की दुनिया भीड़-भाड़, शोरो ग़ुल, हुल्लड़-हंगामे और चकाचौंध की दुनिया है जिसमें इन्सान और इन्सानियत के ख़िलाफ़ हर वक़्त शैतानी चालें और शैतानी साज़िशें खेली जा रही हैं जिसकी वजह से हम जैसे इन्सान तरह-तरह की ज़हनी व रूहानी बीमारियों और मुश्किलों में घिरे हुए हैं बल्कि मुश्किलों के एक ऐसे दलदल में फंसे हुए हैं जिस से निकलने का रास्ता भी नज़र नहीं आता। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि जिन दुनियावी चीज़ों और फ़ैक्टर्स की वजह से हम इन मुश्किलों में फंसे हुए हैं, उन मुश्किलों से निकलने के लिए भी हम उन्हीं लोगों की तरफ़ देखते हैं जिन्होंने हमारे चारों तरफ़ इन मुश्किलों का जाल बुना है। नतीजा यह होता है कि हम मुश्किलों में फंसते जाते हैं। जबकि ज़िन्दगी की मुश्किलों से बाहर निकलने और एक सही ज़िन्दगी बिताने के लिए ख़ुदा ने अपनी किताब क़ुरआन और मासूम इमामों की शक्ल में इल्म के ख़ज़ाने हमारे पास भेजे हैं। इमामों व अहलेबैत[अ०] की ज़िंदगी और उनका बताया रास्ता हमारे लिए सबसे अच्छा रास्ता था और उनमें भी हज़रत अली[अ०] ने जो कुछ कहा या लिखा उस को समेट कर लिखी गई किताब नहजुल बलाग़ा सबसे अलग है जो हर ज़माने में हमें सही रास्ता दिखाने के लिए सबसे रौशन चिराग़ है।

नहजुल बलाग़ा एक ऐसी किताब है जिसमें हज़रत अली[अ०] ने ज़िन्दगी के हर मसले और हर मुश्किल के बारे में

बात की है और उस मुश्किल से निकलने के लिए हमें रास्ता दिखाया है।

जो किताब आपके हाथों में है इसमें कोशिश की गई है कि दुनिया भर में मशहूर किताब 'नहजुल बलाग़ा' में लिखी बातों को बिलकुल आसान ज़बान में अपने उन नौजवानों के सामने पेश किया जाए जो हज़रत अली[अ०] के कलाम को पढ़ना और समझना चाहते हैं।

यह किताब "आईए! नहजुल बलाग़ा से सीखते हैं" ईरान के एक मशहूर राइटर और स्कॉलर जवाद मोहद्दिसी ने लिखी है और आपके सामने यह उसका हिन्दी ट्रांस्लेशन है।

यह किताब इस सिलसिले की पहली कड़ी है। अगर अल्लाह तआला ने तौफ़ीक़ दी तो इस किताब के अगले चार हिस्से भी इंशाअल्लाह जल्दी ही आपके सामने पेश किए जाएंगे जो दुआ, अल्लाह की बंदगी और इस जैसे दूसरे सब्जेक्ट्स पर होंगे ताकि हम अपने पालने वाले से ज़्यादा से ज़्यादा क़रीब हो सकें।

यह किताब आपके हाथों में है। इसे पढ़ने के बाद जो कमियां आपको नज़र आएं वह हमें ज़रूर बताईए ताकि अगले एडिशन में उन्हें दूर किया सके।

ताहा फ़ाउंडेशन
लखनऊ

अपनी बात

ख़ुदा की बारगाह से दूर इन्सान उस बिछड़े हुए परिंदे की तरह होता है जो अपने घोंसले और चमन से कहीं दूर निकल गया हो और वापस आने के लिए तड़प रहा हो।

अगर ख़ुदा की बन्दगी और ख़ुदा के बताए हुए रास्ते पर चलने से इन्सान ख़ुदा की बारगाह से जुड़ भी जाता है तो गुनाह इस रिश्ते को तोड़ देता है और एक इन्सान को ख़ुदा की रेहमत से दूर कर देता है जिसका नतीजा यह होता है कि वह इंसान जहन्नम का ईंधन बन जाता है।

लेकिन सारी बात इतनी ही नहीं है बल्कि इसके बाद भी एक और मंज़िल है जहाँ इन्सान ख़ुदा का सच्चा बंदा बनकर अपने पालने वाले से मिल जाता है और वह बिछड़ा हुआ परिंदा एक बार फिर अपने चमन में अपने आराम भरे घोंसले में पलट आता है। इसी वापस आने का नाम ''तौबा'' है।

तौबा बन्द दरवाज़े के पीछे एक और खुले दरवाज़े का नाम है। तौबा, नाउम्मीदी और मायूसी के आख़िरी दरवाज़े पर उम्मीद की किरन है। जिस वक़्त इन्सान के दिमाग़ पर जिहालत और ग़फ़लत की मार पड़ती है तो वह ''गुनाह के जाल'' और शैतान की चाल में फंस जाता है, और इंसानियत की हदों से बाहर निकल कर हैवानियत का रूप धार लेता है। उसका दिल काला और उसकी ज़िन्दगी दाग़दार हो जाती है और वह ख़ुद अपनी ही ख़्वाहिशों के हाथों एक खिलौना बन जाता है। कभी-कभी तो इस बात का भी एहसास करने लगता है कि जहां पर वह है और जहाँ पर उसे होना चाहिए उसके बीच बहुत ज़्यादा दूरी हो गई है जिसकी वजह से वह एक बहुत गहरी खाई में गिर पड़ा है। इसके

बाद वह ख़ुद से और अपने पैदा करने वाले से शर्मिन्दा होने लगता है और यह सोचने लगता है कि वह बुराईयों व बदबख़्ती के आख़िरी दहाने तक पहुँच गया है जहाँ से अब वापसी नहीं हो सकती। लेकिन ऐसा नहीं है बल्कि तौबा का दरवाज़ा हर वक़्त खुला हुआ है और हर गुनाहगर, मायूस और अपने किए पर पछताने वाले बन्दे के लिए ख़ुदा की तरफ़ से खुला ऐलान है कि वह जब चाहे पलट सकता है। यहाँ पर सबसे ख़ास बात ख़ुदा के इस ऐलान पर कान धरना और ख़ुदा की तरफ़ ध्यान देना है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि ख़ुद ख़ुदा हमें इस गहरी नींद से जगाने के रास्ते पैदा कर देता है।

आईए! एक बार फिर नह्जुल बलाग़ा के सामने बैठते हैं और हज़रत अली[अ॰] की नूरानी व रूहानी बातों से रौशनी लेकर अपनी ज़िंदगी की मज़िंल तलाश करते हैं। देखते हैं कि तौबा के बारे में हज़रत अली[अ॰] नह्जुल बलाग़ा में क्या कह रहे हैं।

जो कुछ आपके सामने है वह चारों तरफ़ अपनी ख़ुश्बू फैलाने वाला हज़रत अली[अ॰] का कलाम और हदीसें हैं जिसे आसान ज़बान में सजाकर पेश किया जा रहा है ताकि कोई भी नौजवान पढ़े तो बात उसके दिल में उतर जाए।

हज़रत अली[अ॰] के ख़ुतबों, ख़तों और हिकमतों का जो रिफ़्रेंस नम्बर दिया गया है वह मरहूम मुफ़ती जाफ़र हुसैन के ट्रांस्लेशन वाली नह्जुल बलाग़ा के मुताबिक़ है।

ख़ुदा करे कि यह किताब हमारे पहले इमाम हज़रत अली[अ॰] की बारगाह में क़ुबूल हो जाए और हमारे लिए ''तौबा'' के दरवाज़े खोल दे!

जवाद मोहद्दिसी

ख़ुदा की तरफ़ वापसी

नुक़सान को जिस जगह से भी रोक दिया जाए, अच्छा है। अपनी ज़िन्दगी के सीधे रास्ते से जो भी हटता है वह अपने कमाल और बुलंदी की तरफ़ जाने के बजाए अपनी बर्बादी की तरफ़ बढ़ता जाता है, फ़ाएदे के बजाए नुक़सान की तरफ़ क़दम बढ़ाता जाता है और हर लम्हे ज़िन्दगी की बाज़ी हारने की कगार पर होता है। इन्सान जब कभी भी ऐसे रास्ते में फंस जाए और अपने आप को एक बन्द गली के अन्दर क़ैद महसूस करने लगे तो उसे चाहिए कि ख़ुदा की बनाई हुई फ़ितरत के नूरानी रास्ते की तरफ़ वापस आ जाए ताकि अपनी पिछली ग़लतियों और कमियों की भरपाई कर सके।

''तौबा'' यानी गुनाहों और नाफ़रमानी से निकलकर ख़ुदा का हुक्म मानने और उसकी इताअत व फ़रमाँबरदारी की तरफ़ आना।

तौबा यानी गुनाहों से निकलकर तक़्वे व ईमान की तरफ़ आना।

तौबा यानी बेधियानी और ग़फ़लत से निकलकर शऊर व समझदारी की तरफ़ आना।

तौबा यानी बुराईयों से निकलकर अच्छाईयों और नेकियों की तरफ़ आना।

ज़ाहिर है कि ऐसी वापसी शऊर व समझदारी मांगती है।

हिम्मत, हौसला और इरादा मांगती है।

ख़ुदा की मदद के अलावा गुनाहों से दूरी के लिए शैतान को मायूस करने की चाहत मांगती है।

इस तरह नतीजा यह निकलता है कि तौबा का मतलब सिर्फ़ ज़बान से कह देना नहीं है बल्कि गुनाहों से दिली नफ़रत के अलावा गुनाहों को छोड़ देने का पक्का इरादा भी होना

चाहिए। गुनाहों का ख़तरा तो हर वक़्त और हर हाल में मौजूद है, इसलिए गुनाहों से तौबा भी फ़ौरन ''वाजिब'' है क्योंकि अगर वक़्त हाथ से निकल जाए और इन्सान एक ऐसी जगह पर पहुँच जाए जहां से वापसी कर ही न सकता हो तो ऐसी हालत में तौबा का हाथ थामना भी फ़ाएदेमन्द नहीं होगा।

जैसा कि क़ुरआन में लिखा हैः

> तौबा उन लोगों के लिए नहीं है जो पहले बुराईयाँ करते हैं और फिर जब मौत सामने आ जाती है तो कहते हैं कि अब हम ने तौबा कर ली।[1]

मौत अचानक आती है, मौत का वक़्त और उसे कैसे आना है, इस बारे में कोई नहीं जानता। इसलिए इस से पहले कि वक़्त हाथ से निकल जाए, हर इन्सान को अपना हिसाब-किताब साफ़ कर लेना चाहिए और आज-कल, आज-कल करने के बजाए फ़ौरन अपने गुनाहों से तौबा कर लेना चाहिए।

हज़रत अली[अ०] अपनी वसिय्यत में अपने बड़े बेटे इमाम हसन[अ०] से कहते हैंः

> तुम वह हो जिसका मौत पीछा किये हुए है, जिस से भागने वाला छुटकारा नहीं पाता। कितना ही कोई चाहे उसके हाथ से नहीं निकल सकता और वह बहरहाल उसे पा लेती है। इसलिए इस बात से डरो कि मौत तुम्हें ऐसे गुनाहों की हालत में आ जाए जिन से तुम दिल में तौबा के ख़याल लाते थे।

इसी तरह इमाम अली[अ०] तौबा के बारे में कहते हैंः

> मगर वह तुम्हारे और तौबा के बीच आ जाए। ऐसा हुआ तो समझ लो कि तुम ने अपने आपको हलाक कर डाला।[2]

अगर हम ख़ुदा की पाकीज़गी और अपनी फ़ितरत की तरफ़ पलट जाएं तो ख़ुदा तक पहुंचने का रास्ता आसानी से मिल जाएगा।

1- सूरए निसा/18
2- नहजुल बलाग़ा, ख़त/31

तौबाः रहमत का दरवाज़ा

तौबा उम्मीद की एक किरन और ख़ुदा की रहमत की तरफ़ खुला हुआ एक दरवाज़ा है, जहाँ उम्मीद और उजाले के आने-जाने के लिए एक रौशनदान भी है ताकि इन्सान अपनी निजात के सारे रास्तों को बंद न समझ बैठे, ख़ुद को जहन्नम का ईंधन और बेकार व नाकाम इंसान न मान बैठे। यह रहमत का दरवाज़ा इसलिए भी है कि वह तबाही व गुमराही के समंदर में डूबने से भी बच जाए।

अगर ख़ुदा का यह वादा है कि मैं तौबा करने वालों की तौबा क़ुबूल करूँगा तो यह बन्दों के ऊपर उसका बहुत बड़ा करम और उम्मीद की तरफ़ खुलने वाला दरवाज़ा है। ख़ुदा ने अपनी पाक किताब क़ुरआन मजीद में जहाँ हमें तौबा की दावत दी है और तौबा करने वालों को पसन्द किया है वहीं पर हमें ख़ुदा की रहमत से मायूस होने से मना भी किया है।

क़ुरआन में हैः

> ख़ुदा की रहमत से मायूस न होना, अल्लाह हर गुनाह को माफ़ करने वाला है।[1]

क़ुरआन की यह आयत न सिर्फ़ यह कि गुनाहगारों को ख़ुदा की रहमत की उम्मीद बंधाती है बल्कि ना उम्मीदी व मायूसी को बुरा भी बता रही है क्योंकि ख़ुदा का करम और उसकी बख़्शिश का दायरा बन्दों के गुनाहों से कहीं ज़्यादा फैला हुआ है। उसकी रहमत, उसके ग़ज़ब पर छाई हुई है।

हज़रत अली[अ०] ने एक जगह ख़ुदा की रहमत और मेहरबानी की एक तस्वीर पेश की है और उसमें तौबा की याद दिलाते हुए गुनाहगार इन्सानों को रास्ता दिखाया हैः

ज़रा उस हालत के बारे में सोचो, वह तुम्हारी तरफ़ बढ़ रहा है और तुम उस से मुँह फेरे हुए हो और वह तुम्हें माफ़ करने के लिए बुला रहा है और तुम्हें अपने करम व एहसान से ढाँपना चाहता है और तुम हो कि उससे मुंह फेरकर दूसरी तरफ़ रुख़ किये हुए हो। बुलन्द है वह ख़ुदा जो कितना बड़ा करीम है और तुम इतने कमज़ोर व हक़ीर और फिर भी गुनाह करने की हिम्मत व जुरअत रखते हो हालांकि उसी ख़ुदा के साए में जी रहे हो और उसी के करम व एहसान की चादर में उठते-बैठते हो। उसने अपने करम को तुम से रोका नहीं और न तुम्हारा पर्दा चाक किया है बल्कि उसकी किसी नेमत में जो उसने तुम्हारे लिए पैदा की या किसी गुनाह में कि जिस पर उसने पर्दा डाला या किसी मुसीबत व इम्तेहान में कि जिसका रुख़ तुम से मोड़ा, उसका करम तुम से ज़रा सी देर के लिए भी दूर नहीं हुआ। यह इस सूरत में है कि जब तुम गुनाह करते हो तो फिर तुम्हारा उसके बारे में क्या ख़याल है ? अगर तुम उसका कहा मानते होते।[2]

इन्सान उम्मीद ही के सहारे ज़िन्दा रह पाता है। ''उम्मीद और डर'' इंसान की ज़िन्दगी में दो पर हैं और वह इन्हीं दोनों परों के ज़रिए अपनी मंज़िल को तय करता है। अगर इन्सान ख़ुदा की रहमत व मग़फ़िरत से मायूस हो जाए तो वह हर तरह के जुर्म और गुनाहों में आसानी से फंस जाएगा क्योंकि अगर निजात की उम्मीद ही न हो तो कोई भी ऐसा गुनाह नहीं बचेगा जिसको वह कर न चुका हो। तभी तो कहा जाता है कि ख़ुदा की रहमत से मायूसी 'गुनाहे कबीरा' है।

ख़ुदा अपने करम की वजह से सबसे पहले अपने बन्दों को तौबा की तरफ़ बुलाता है और फिर उसके दिल में यह

ख़याल डाल देता है कि वह पलट आए। कभी ख़ुदा उसे इतना ग़मगीन व परेशान कर देता है कि वह अपनी इस गहरी नींद से चौंके और अपने बारे में सोचने पर मजबूर हो जाए। कभी उसे बलाओं व मुसीबतों में उलझा देता है ताकि उसका ध्यान ख़ुदा की तरफ़ ज़्यादा हो जाए। कभी उसकी मुसीबतों और परेशानियों को इतना बढ़ा देता है कि उसके रास्ते में मुसीबतों के पहाड़ खड़े कर देता है ताकि उसे झिंझोड़े और वह यह मुसीबतें देख कर अपने पालने वाले की तरफ़ लौट आए। यह सब कुछ और यह सारे हालात सिर्फ़ इसलिए हैं कि इन्सान तौबा के लिए तैयार हो जाए। यह सब ख़ुदा की रहमतों के अलग-अलग जलवे हैं ताकि इन्सान अपने नफ़्स और शैतान के चंगुल से छुटकारा पा जाए।

हज़रत अली[अ०] कहते हैंः

> उसने तौबा का दरवाज़ा खोल रखा है।[3]

जिस वक़्त हज़रत आदम[अ०] शैतान की वजह से जन्नत से निकाले गए तो ख़ुदा ने उन पर ''तौबा'' का दरवाज़ा खोल दिया था और उन्हें ''कलमाते तौबा'' की तालीम देकर जन्नत में पलटाने का वादा किया था।

> फिर अल्लाह ने आदम के लिए तौबा की गुन्जाइश रखी। उन्हें रहमत के कलमे सिखाए। जन्नत में दोबारा पहुँचाने का उन से वादा किया।[4]

भला यह कैसे हो सकता है कि एक गुनाहगार इन्सान, सच्चे दिल और सच्ची नियत के साथ ख़ुदा की तरफ़ आना चाहे और ख़ुदा उस पर अपना दरवाज़ा बन्द करके उसे अपनाने से इन्कार कर दे ?!

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैंः

> अगर लोग उस वक़्त कि जब उन पर मुसीबतें टूट रही हों और नेमतें उन से दूर हो रही हों, सच्ची नियत व सच्चे दिल से अपने अल्लाह की

तरफ़ ध्यान दें तो वह वापस हो जाने वाली नेमतों को फिर से उनकी तरफ़ पलटा देगा और हर ख़राबी को ठीक कर देगा।[5]

क्या एक बन्दे की तौबा ख़ुदा की रहमत के दरवाज़े के खुलने की वजह नहीं है ?

गुनाह चाहे जितने भी ज़्यादा हों, ख़ुदा का करम उन से कहीं ज़्यादा है। हमारे ख़ुदा से हमारा रिश्ता उसके ''करम'' और ''रहमत'' के उसूल की बुनियाद पर होना चाहिए।

जब सारे दरवाज़े इन्सानों पर बन्द हो जाते हैं तब भी अल्लाह की रहमत का दरवाज़ा गुनाहगारों के लिए खुला हुआ होता है, लेकिन शर्त यह है कि यह ''वापसी'' अपने गुनाहों पर सच्ची शर्मिंदगी और मज़बूत इरादे के साथ हो जिसको दीनी ज़बान में ''तौब-ए-नुसूह'' कहा जाता है।

1- सूरए ज़ुमर/53

2- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/220

3- नहजुल बलाग़ा, ख़त-31 (इमाम हसन[अ०] को वसिय्यत)

4- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/1

5- नहजुल बलाग़ा/178

तौबा की हक़ीक़त

तौबा सिर्फ़ एक ''लफ़्ज़'' का नाम नहीं बल्कि ''अमल'' का नाम है। जब कोई गुनाह की बुराई और उसकी गंदगी को समझ जाता है, अपनी पिछली ग़लतियों पर शर्मिन्दा होता है और यह पक्का इरादा कर लेता है कि अब वह गुनाहों की तरफ़ नहीं जाएगा बल्कि अपने छूटे हुए नेक कामों की भरपाई करेगा तो यही तौबा ''सच्ची तौबा'' कहलाती है।

अगर हदीसों में तौबा के मायनी ''शर्मिन्दगी व पछतावे'' के हैं तो इस से मुराद वही पछतावा है जिसके बाद इंसान नेक कामों की तरफ़ आ जाए।

हक़ीक़त यह है कि जब तक कोई अपने किए पर शर्मिन्दा नहीं होता और गुनाहों को छोड़ने का पक्का इरादा नहीं करता, तब तक वह अपने सुधार के लिए कोई ठोस क़दम भी नहीं उठाता। इससे यह बात समझ में आती है कि ''शर्मिन्दगी व पछतावा'' तौबा का एक बुनियादी फ़ैक्टर है, इस्तेग़फ़ार और माफ़ी का नम्बर तो इसके बाद आता है, और छूटे हुए आमाल व कामों की भरपाई तीसरा मरहला है।

क़ुरआन मजीद में आमतौर पर ''तौबा'' का ज़िक्र ''इस्लाह'' के साथ आया है। जैसेः

> जो तौबा कर लेगा और अमले सालेह (नेक अमल) करेगा।[1]

या यह आयतः

> उन लोगों के अलावा जो तौबा कर लें और अपने किये की इस्लाह (ठीक) कर लें।[2]

नह्जुल बलाग़ा में ''तौबा'' की छः स्टेज बयान की गई हैं जिन से तौबा की हक़ीक़त सामने आ जाती है। किसी ने इमाम अली[अ०] के सामने 'अस्तग़फ़िरुल्लाह' कहा तो इमाम ने कहा कि क्या तुम जानते हो कि इस्तेग़फ़ार क्या होता है ? इस्तेग़फ़ार बड़े इन्सानों का एक बहुत बड़ा दर्जा है। इस्तेग़फ़ार एक ऐसा लफ़्ज़ है जिसकी छः स्टेज हैंः

1- इंसान अपने किये हुए पर शर्मिंदा हो।

2- हमेशा के लिए गुनाह को छोड़ने का पक्का इरादा करे।

3- लोगों के हक़ अदा करे और उन से माफ़ी मांगे।

4- जो वाजिब काम छूट गए हैं उन्हें पूरा करे।

5- हराम रिज़्क़ के ज़रिए जिस गोश्त-पोस्त का उसके बदन में इज़ाफ़ा हुआ है, उसको ग़म व परेशानी की गर्मी से पिघला दे ताकि नया गोश्त-पोस्त पैदा हो।

6- जिस तरह उसके जिस्म को गुनाह करते वक़्त मज़ा आता था उसी तरह अपने जिस्म को ख़ुदा की इताअत की सख़्ती का मज़ा चखाए।

जब यह सब कर ले तो उसके बाद कहेः

[3]استغفر الله

''अस्तग़फ़िरुल्लाह''

हज़रत अली[अ०] की इस बात का मतलब यह है कि तौबा व इस्तेग़फ़ार सिर्फ़ ज़बान से ''अस्तग़फ़िरुल्लाह'' कहने का नाम नहीं है और सिर्फ़ गुनाहों का इन्कार करने का नाम नहीं है बल्कि ''अस्तग़फ़िरुल्लाह'' यानी ज़बान के साथ-साथ अमल करके दिखाना भी है। सिर्फ़ अपने आप को बुराईयों से रोक लेना नहीं है बल्कि पिछले छूटे हुए आमाल और कामों को पूरा करना भी ज़रूरी है।

तौबा के लिए ज़रूरी है कि ''नेकियों'' से गुनाहों को ढक दिया जाए, अगर वाजिब काम छूट गए हैं तो पहले उन्हें पूरा किया जाए, अगर किसी की तौहीन, ग़ीबत या मज़ाक़

उड़ाकर दूसरों के हक़ छीने हैं तो उन हक़ों को अदा किया जाए, अगर किसी का माल या किसी की अमानत रह गई है तो उसे अदा किया जाए..., जब यह सब हो जाए तब मग़फ़िरत व बख़्शिश होती है।

बहरहाल तौबा की पहली शर्त और तौबा की तरफ़ उठने वाला पहला क़दम यह है कि इन्सान समझदारी और बेदारी की उस ऊंचाई पर पहुँच जाए कि उसके किसी भी काम की बुराई व गंदगी उसको शर्मिन्दा होने पर मजबूर कर दे क्योंकि अगर दिल के अन्दर गुनाहों पर शर्मिंदगी की हालत पैदा नहीं होगी और उसके अंदर गुनाहों से पहले जैसी दिलचस्पी और शौक़ अपनी जगह बाक़ी रहेगा तो ऐसी हालत में सिर्फ़ ज़बानी इस्तेग़फ़ार होगा जिसका कोई फ़ायदा नहीं है और इस तरह उसके गुनाहों का बोझ बिल्कुल कम नहीं होगा।

हदीसों में आया हैः

> जो ज़बान से तो इस्तेग़फ़ार करे मगर उसके दिल में गुनाहों का शौक़ और इरादा बाक़ी रहे तो ऐसे इंसान ने जैसे इस्तेग़फ़ार का मज़ाक़ उड़ाया है।

1- सूरए फ़ुरक़ान/71
2- सूरए बक़रा/160
3- नहजुल बलाग़ा, हिकमत/417

तौबा और गुनाहों की भरपाई

गुनाह यानी पाप दिल को काला और हमारे बोझ को भारी बना देता है। यह हमारी रूहानी परवाज़ और रूहानी तरक़्क़ी की रफ़्तार को भी धीमा कर देता है।

गुनाह के मुक़ाबले में तौबा है यानी गुनाहों को छोड़कर एक बार फिर अपने पालने वाले की बारगाह में वापस आना और उससे माफ़ी मांगना। तौबा के ज़रिए दिल का नूर वापस आ जाता है, गुनाहों का बोझ उतर जाता है और ऊंची-ऊंची रूहानी परवाज़ की रुकावटें ख़त्म हो जाती हैं, बिल्कुल उस परिन्दे की तरह जो पानी में गिर कर भीग गया हो और परों के भारी हो जाने की वजह से इस असीम आसमान में उड़ न सकता हो। अब अगर उसे उड़ना है तो अपने परों को झिटकना और उन्हें सुखाना होगा ताकि बिना किसी रुकावट के इस खुले आसमान की बुलन्दियों में सैर कर सके।

तौबा बन्दगी के रास्ते में पैरों में पड़ी ज़ंजीरों को खोलने का नाम है ताकि अपने मालिक और अपने पालने वाले की तरफ़ अपने सफ़र को फिर से आगे बढ़ाया जा सके।

नहजुल बलाग़ा में हज़रत अली[अ०] कहते हैं:

> दुनिया में सिर्फ़ दो लोगों के लिए भलाई है: एक वह जो गुनाह करे तो तौबा से उसकी भरपाई करे और दूसरा वह जो नेक कामों में तेज़ी दिखाने वाला हो।[1]

तौबा हाथ आया हुआ वह बेहतरीन मौक़ा है जिसमें पिछले बुरे कामों व गुनाहों को धोया जा सकता है। अगर किसी ने भी इस छूट और इस हाथ आए मौक़े से फ़ायदा नहीं

उठाया तो यह ख़ुद उसकी कमी है क्योंकि उसे अपनी ख़ामियों और कमियों को सुधारने का मौक़ा भी मिला था, ख़ुदा की तरफ़ से उसे अपनी तरफ़ बुलाया भी गया था और तौबा करने के लिए कोई रुकावट भी नहीं थी।

हज़रत अली[अ०] कहते हैंः

> अगर तुम ने गुनाह किये हों तो उसने तुम्हारे लिए तौबा की गुन्जाइश ख़त्म नहीं की है और न सज़ा देने में जल्दी की है, न तौबा के बाद वह कभी ताना देता है (कि तुम ने पहले यह किया था, वह किया था), न ऐसे मौक़ों पर उसने तुम्हें ज़लील किया कि जहाँ तुम्हें ज़लील होना ही चाहिए था, और न उसने तौबा के क़ुबूल करने में (कड़ी शर्तें लगाकर) तुम्हारे साथ सख़्ती की है, न गुनाह के बारे में तुम से सख़्ती के साथ बहस करता है और न अपनी रहमत से मायूस करता है। बल्कि उस ने गुनाह से दूर होने को भी एक नेकी कहा है और बुराई एक हो तो उसे एक (बुराई) और नेकी एक हो तो उसे दस (नेकियों) के बराबर ठहराया है। उसने तौबा का दरवाज़ा खोल रखा है।[2]

एक दूसरी जगह इमाम अली[अ०] कहते हैंः

> वह गुनाह मुझे परेशान नहीं करता जिसके बाद मुझे इतना वक़्त मिल जाए कि मैं दो रकअत नमाज़ पढ़ लूं और अल्लाह से अमन व अमान मांग लूँ।[3]

इस बात का मतलब यह है कि तौबा व इस्तेग़फ़ार की छूट हक़ीक़त में गुनाह के असर को मिटाने और हमारे नाम-ए-आमाल को गुनाहों की गंदगी से पाक करने का नाम है, कहीं ऐसा न हो कि हम इस छूट से फ़ायदा न उठा सकें और वक़्त निकल जाने के बाद तौबा का दरवाज़ा भी बन्द हो

जाए।

क्या कहना उनका जिन्होंने इस ''भरपाई'' की मिली छूट को ग़नीमत जाना और तौबा के मौक़े से फ़ायदा उठा लिया।

हज़रत अली[अ०] अपने एक ख़त में उस्मान बिन हनीफ़ को लिखते हैंः

> कितना ख़ुशनसीब है वह इंसान जिसने अल्लाह के फ़रीज़ों को पूरा किया। सख़्ती और मुसीबत में सब्र किये पड़ा रहा। रातों को अपनी आँखों को बेदार रखा और जब नींद का ज़ोर बढ़ा तो हाथ को तकिया बनाकर उन लोगों के साथ ज़मीन पर पड़ रहा जिनकी आँखें क़यामत के डर से बेदार, पहलू बिछौनों से अलग और होंट ख़ुदा की याद में ख़ुदा का ज़िक्र करते रहते हैं और इस्तेग़फ़ार की ज़्यादती से जिनके गुनाह छुट गए हैं।[4]

कभी-कभी इंसान को पिछले लोगों, ख़ासकर गुनाहगारों की ज़िन्दगियों की स्टडी करने से उनके भयानक अंजाम को देखकर जीने का सबक़ और ''अपने किए की भरपाई'' का मौक़ा मिल जाता है ताकि वह अपनी दुनियावी ख़्वाहिशों और लम्बी-लम्बी आरज़ुओं में न फंसा रहे और ''पिछले वालों'' की हिस्ट्री को पढ़कर अपने ''आने वाले वक़्त'' के लिए सीख ले और हिस्ट्री के रौशन चिराग़ की रौशनी में ज़िन्दगी के बाक़ी रास्ते को तय करे।

हज़रत अली[अ०] इस सिलसिले में फ़रमाते हैंः

> क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो दूर की उम्मीदें लगा बैठे थे, जिन्होंने मज़बूत महल बनाए थे और ढेरों माल जमा किया था। किस तरह उनके घर क़ब्रों में बदल गए और जमा की गई पूँजी बर्बाद हो गई और उनका माल वारिसों

का हो गया और उनकी बीवियाँ दूसरों के पास पहुँच गईं। (अब) न वह नेकियों में कुछ इज़ाफ़ा कर सकते हैं और न इसका कोई मौक़ा है कि वह किसी गुनाह के बाद (तौबा करके) अल्लाह की मर्ज़ी हासिल कर लें।[5]

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैंः

तुम से पहले वाले लोगों की तबाही की वजह यह है कि वह उम्मीदों के दामन फैलाते रहे और मौत को नज़रों से ओझल समझते रहे। यहाँ तक कि जब वादा की हुई (मौत) आ गई तो उनके बहाने को ठुकरा दिया गया, तौबा उठा ली गई और मुसीबत उन पर टूट पड़ी।[6]

जब तक जान में जान है, सांस आ-जा रही है, जब तक फ़ुरसत के लम्हे और अपने लिए सही रास्ता चुनने का मौक़ा हमारे हाथ में है तब तक हमें चाहिए कि हम अपनी पिछली कमियों और ख़ामियों की भरपाई कर लें वरना अगर एक बार यह मौक़ा निकल गया तो फिर हाथ नहीं आएगा।

1- नहजुल बलाग़ा, हिकमत/94
2- नहजुल बलाग़ा, ख़त/31
3- नहजुल बलाग़ा, हिक्मत/299
4- नहजुल बलाग़ा, ख़त/45
5- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/130
6- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/145

गुनाह और तौबा का असर

अल्लाह ने इस दुनिया को एक ऐसे सिस्टम पर चलाया है जिसमें हर चीज़ की एक वजह और एक Cause होता है।दूसरे लफ़्ज़ों में यूं कहा जाए कि इस दुनिया में हर तरफ़ एक Cause and Effect System पाया जाता है। जिस तरह खाने-पीने की कुछ चीज़ें इन्सान के बदन और उसकी जिस्मानी सेहत के लिए नुक़सानदेह हैं और कुछ इलाज या कुछ परहेज़ इन्सान के जिस्म को ठीक-ठाक रखते हैं बिल्कुल उसी तरह इन्सान के कुछ काम और कुछ सिफ़तें उसकी शख़्सियत और उसकी रूह को ख़राब करने में लगी रहती हैं। इंसान के कुछ काम, कुछ आमाल, कुछ बुराईयां, कुछ सिफ़तें उसकी ज़ाती ज़िंदगी व समाजी ज़िन्दगी पर बहुत बुरा असर डालती हैं। इसी के मुक़ाबले में इंसान के कुछ काम और कुछ आमाल ऐसे भी हैं जो न सिर्फ़ उसके लिए बल्कि पूरे समाज के लिए फ़ाएदेमंद होते हैं यानी इन्सान की रूह, कैरेक्टर व अख़्लाक़ में कुछ चीज़ों की वजह से तबदीली होती रहती है। गुनाह और तौबा भी उन्हीं में से हैं।

गुनाह दिल को 'काला', नाम-ए-आमाल को 'दाग़दार' और इन्सान को बदबख़्त और जहन्नमी बना देता है जबकि तौबा इन्सान के लिए रूहानियत, नूरानियत, कामयाबी और जन्नत में दाख़िले का पैग़ाम लेकर आती है। गुनाह का काम इन्सान को ख़राब करना और बिगाड़ना है और तौबा का काम इन्सान को बनाना और संवारना है। गुनाह नेमतों के छिन जाने की वजह बन जाता है और तौबा नेमतों को बढ़ाती है और उन्हें बाक़ी रखती है। गुनाहों की वजह से ख़ुदा का ग़ज़ब

होता है तो तौबा से ख़ुदा ख़ुश होता है।

हज़रत अली[अ०] कहते हैंः

> ख़ुदा की क़सम! जिन लोगों के पास ज़िन्दगी की बेहतरीन नेमतें थीं और फिर उनके हाथों से निकल गईं, यह उनके गुनाहों की वजह से है क्योंकि अल्लाह तो किसी पर ज़ुल्म नहीं करता। जब लोगों पर मुसीबतें टूट रही हों और नेमतें उन से छिन रही हों, अगर उस वक़्त लोग सच्ची नियत व दिल से अपने अल्लाह की तरफ़ ध्यान लगाएं तो वह पलट जाने वाली नेमतों को फिर उनकी तरफ़ पलटा देगा और हर ख़राबी को ठीक कर देगा।[1]

इसका मतलब गुनाह नेमतों को छीन लेते हैं और तौबा की वजह से नेमतें दोबारा पलट आती हैं। कभी-कभी ख़ुदा इन्सान को ग़फ़लत की गहरी नींद से जगाने के लिए भी मुसीबतों और परेशानियों के कड़वे घूँट पिलाता है ताकि वह बलाओं और मुसीबतों के मज़े को चख ले और सीधे रास्ते पर आ जाए यानी तौबा के ज़रिए अपने आप को संवार ले।

हज़रत अली इस बारे में कहते हैंः

> अल्लाह बन्दों को उनकी बुराईयों के वक़्त फलों के कम करने, बरकतों के रोक लेने और इनामों के ख़ज़ानों को बंद कर देने से आज़माता है ताकि तौबा करने वाला तौबा करे, (इनकार करने से) बाज़ आने वाला बाज़ आ जाए, नसीहत लेने वाला नसीहत ले ले और गुनाहों से रुकने वाला रुक जाए। अल्लाह ने तौबा व इस्तेग़फ़ार को रोज़ी के उतरने और मख़लूक़ पर रहम खाने का ज़रिया बनाया है। तभी तो उसका हुक्म है कि अपने परवरदिगार से तौबा व इस्तेग़फ़ार करो। बेशक वह बहुत बख़्शने वाला है, वही तुम पर मूसलाधार बारिश करता है और

> माल व औलाद से तुम्हें सहारा देता है। ख़ुदा उस पर रहम करे जो तौबा की तरफ़ आ जाए और गुनाहों से हाथ उठा ले और मौत से पहले नेक आमाल करे।[2]

इसलिए तौबा से फ़ाएदा उठाना यानी ख़ुद को ख़ुदा की रहमत के साए में ले आना और उसकी बरकतों से मालामाल होना है।

तौबा से हम क्यों फ़ाएदा उठाएं ?

इस बारे में हज़रत अली[अ०] कहते हैंः

> दुनिया में ख़ुदा के अज़ाब से बचाने वाली और अमान देने वाली दो चीज़ें थींः एक उनमें से उठ गई मगर दूसरी तुम्हारे पास मौजूद है। इसलिए उसे मज़बूती से थामे रहो। वह अमान जो उठा ली गई वह अल्लाह के रसूल[स०] थे और वह अमान जो बाक़ी है वह तौबा व इस्तेग़फ़ार है। जैसा कि अल्लाह ने कहा है, ''अल्लाह उन लोगों पर अज़ाब नहीं करेगा जब तक आप उनमें मौजूद हैं।'' अल्लाह इन लोगों पर उस वक़्त तक अज़ाब नहीं उतारेगा जब तक कि यह लोग तौबा व इस्तेग़फ़ार कर रहे होंगे।[3]

लेकिन ध्यान रहे कि यह दुनिया में नाज़िल होने वाले वह आम अज़ाब हैं जो पिछली उम्मतों व क़ौमों पर भी आए हैं। ख़ुदा ने बिजली, सैलाब, ज़लज़ला व तूफ़ान के ज़रिए उनके गुनाहों और उनकी बुराईयों की सज़ा दी थी, उनकी सारी आबादियों को तहस-नहस कर दिया था जिनके बारे में क़ुरआन ने बहुत सी मिसालें पेश की हैं।

इसलिए हमें गुनाहों के भयानक अंजाम व असर को अंदेखा नहीं करना चाहिए और न गुनाहों के बाद अपने सुधार और उसकी भरपाई से मायूस होना चाहिए। ज़लज़ला, तूफ़ान, सैलाब जैसी नेचुरल मुसीबतें हमेशा नेचर की वजह

से ही नहीं आती हैं बल्कि कई बार यह क़ुदरत का तमांचा भी होता है।

आईए! देखते हैं कि इस बारे में क़ुरआन क्या कह रहा है:

> लोगों के हाथों की कमाई की वजह से फ़साद ख़ुश्की और तरी हर जगह फैल गया है ताकि ख़ुदा उनको उनके कुछ आमाल का मज़ा चखा दे तो शायद यह लोग पलट कर रास्ते पर आ जाएं।[4]

अफ़सोस की बात यह है कि आज के ज़माने में जब ज़लज़ला व सैलाब और दूसरे भयानक हादसे होते हैं तो ज़्यादा तर लोगों की निगाहें इन हादसों के सिर्फ़ दुनियावी व नेचुरल फ़ैक्टर्स पर लगी होती हैं।

मकानों व बिल्डिंगों की मज़बूती और सैलाब की रोकथाम के बारे में बहस होती है। फिर इन नेचुरल आफ़तों से बचने के लिए दुनिया भर की कोशिशें की जाती हैं। इन कोशिशों से हमें कोई इन्कार भी नहीं है और यह सब होना भी चाहिए लेकिन हमें इस बात को भी अंदेखा नहीं करना चाहिए कि ज़मीन व आसमान, दरिया, हवाओं वग़ैरा का यह सिस्टम ख़ुदा के हुक्म पर चलता है और उसके इशारे पर नाचता है। इस सिस्टम के पीछे ख़ुदा की क़ुदरत चल रही है, और यह ख़ुदा की क़ुदरत ही का एक फ़ार्मूला है कि वह इन्सानों को नेचुरल बलाओं और अचानक आने वाली आफ़तों के ज़रिए उनके गुनाहों और ग़लतियों की तरफ़ उनका ध्यान दिलाता है ताकि वह ख़ुदा के रास्ते पर वापस आ जाएं और ख़ुदा की इस ज़मीन पर अकड़कर चलना बंद कर दें।

दुआए कुमैल में है कि अल्लाह की बारगाह में उन गुनाहों से तौबा करो जिनकी वजह से बलाएं नाज़िल होती हैं और जिनकी वजह से ख़ुदा की नेमतें छिन जाती हैं।

उन गुनाहों से तौबा करो जो दुआओं के क़ुबूल होने में रूकावट बन जाते हैं और जिनकी वजह से ख़ुदा इन्तेक़ाम व

बदला लेता है।[5]

1- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/176
2- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/141
3- नहजुल बलाग़ा, हिकमत/88
4- सूरए रूम/41
5- اللهم اغفرلی الذنوب التی تنزل البلاء

देरी किस बात की?

ख़ुदा की बारगाह में उस नौजवान को बड़ी अच्छी निगाहों से देखा जाता है जो तौबा करने वाला होता है। तौबा सिर्फ़ उन लोगों के लिए नहीं है जो मौत की कगार पर खड़े हों या जिनकी आख़िरी सासें चल रही हों। तौबा में देरी तो ख़ुद कई आफ़तों को अपने साथ ले आती है। कभी बेधियानी व फ़रामोशी इन्सान को तौबा से दूर रखती है, कभी अचानक आने वाली मौत इन्सान से तौबा का मौक़ा छीन लेती है, कभी गुनाहों का बोझ इन्सान को तौबा नहीं करने देता... और इस बात की भी क्या गारंटी है कि हम बूढ़े होने के बाद तौबा कर ही लेंगे।

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैंः

> तुम को उन लोगों में से नहीं होना चाहिए जो अमल के बिना अच्छे अंजाम की उम्मीद रखते हैं और उम्मीदें बढ़ाकर तौबा में देरी करते हैं।[1]

अगर हम, सेहत व सलामती, जवानी और आसानी व राहत के वक़्त में तौबा को अंदेखा करते रहे और बराबर गुनाहों के दलदल में फंसते चले गए तो इसका नतीजा यह होगा कि गुनाहों की ज़्यादती और दिल की सख़्ती की वजह से तौबा करने की तौफ़ीक़ हम से छिन जाएगी जिसके बाद तौबा करने का मौक़ा भी हमारे हाथ से निकल जाएगा। अब इसके बाद जो नुक़सान होगा उसकी भरपाई नहीं की जा सकती।

हज़रत अली[अ०] कहते हैंः

> मौत के आ जाने से तौबा उठा ली जाती है और तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जाता है।

इमाम अली[अ०] ही यह भी कहते हैः

> खुली निशानियों पर जम कर अमल करो। रास्ता बिल्कुल सीधा है वह तुम्हें सलामती के घर (जन्नत) की तरफ़ बुला रहा है और अभी तुम ऐसे घर में हो जहाँ तुम्हारे पास इतना वक़्त है कि उसकी ख़ुशी हासिल कर सको। अभी भी मौक़ा है क्योंकि आमालनामे खुले हुए हैं, क़लम चल रहे हैं, बदन तन्दुरुस्त हैं, ज़बान आज़ाद है, तौबा सुनी जा सकती है और आमाल क़ुबूल किये जा सकते हैं।[2]

हज़रत अली[अ०] हमें यह बताना चाह रहे हैं कि देखो! एक दिन ऐसा भी आ सकता है जब तुम में न नेक काम करने की ताक़त होगी और न गुनाहों को छोड़ने की हिम्मत, यहाँ तक कि तुम्हारी ज़बान भी इस्तेग़फ़ार के लिए नहीं खुलेगी, तुम्हारा नाम-ए-आमाल बन्द हो चुका होगा और तुम्हारी तौबा भी क़ुबूल नहीं होगी। जब इन्सान पर ऐसा वक़्त भी आ सकता है तो फिर तौबा में देरी कैसी ?!

एक जगह हज़रत अली[अ०] कहते हैंः

> ख़ुदा के बन्दो! अभी भी ग़नीमत है क्योंकि गर्दन में फंदा नहीं पड़ा है और रूह भी आज़ाद है। हिदायत लेने का वक़्त, जिस्मों की राहत और मजलिसों के इज्तेमा, ज़िन्दगी की बाक़ी मोहलत, नए सिरे से अपनी आज़ादी के साथ काम लेने के मौक़े, तौबा की गुन्जाइश और इत्मिनान की हालत... इससे पहले कि यह सब ख़त्म हो जाए और डर व परेशानी छा जाए और इस से पहले कि मौत आ जाए और क़ादिर व ग़ालिब ख़ुदा की पकड़ उसे जकड़ ले।[3]

शैतान की सारी कोशिश बस यह होती है कि वह किसी तरह इन्सानों को अपने फ़रेब और धोखे के जाल में

फंसाकर तौबा करने से रोक दे। यहाँ तक कि वक़्त गुज़र जाए और इन्सान आख़िरकार जहन्नम का ईंधन बन जाए।

अगर किसी को तौबा की तौफ़ीक़ न मिल सके तो उसके लिए हमेशा-हमेशा के लिए हसरत, मायूसी, शर्मिंदगी और पछतावा बाक़ी रह जाएगा। यहाँ तक कि वह जहन्नम की आग में पहुँचने के बाद भी अपने हाथ मलेगा कि मैंने तौबा क्यों नहीं की? मैंने रास्ता क्यों नहीं बदला? इतनी देर में मेरी आंखें क्यों खुलीं?

इस बारे में फ़ारसी के मशहूर शायर बाबा ताहिर कहते हैंः

> वह काम मत करो जिस से तुम्हारे पैरों में बेड़ी पड़ जाए और यह लम्बी-चौड़ी दुनिया भी तुम्हारे लिए सिकुड़कर ज़रा सी हो जाए।
>
> और जब क़यामत में ख़ुदा का फ़रिश्ता तुम्हें तुम्हारा नाम-ए-आमाल पढ़कर सुनाए तो उस वक़्त तुम्हें रुस्वा और शर्मिन्दा होना पड़े।

हज़रत अली[अ०] कहते हैंः

> क्या मौत से पहले अपने गुनाहों से तौबा करने वाला कोई नहीं।[4]

शैतान ने इंसान को बहकाने की जो क़सम खाई थी वह क़सम आज भी बाक़ी है और वह अपने नित-नये तरीक़ों से हर वक़्त इस काम में लगा हुआ है। वह आरज़ुओं, ख़्वाहिशों, उम्मीदों, धोखे और फ़रेब के ज़रिए मोमिन को तौबा से दूर रखता है[5] ताकि इन्सान की निजात (निरवान) पाने की ख़्वाहिश पूरी ही न हो सके और वक़्त गुज़र जाए। शैतान इंसानों के सामने बुराईयों को सजा-संवारकर पेश करता है ताकि वह उसकी तरफ़ खिंचे चले आंए और तौबा से दूर रहें।

हज़रत अली[अ०], शैतान के इस फ़रेब और मक्कारी की तरफ़ यूँ इशारा करते हैंः

> शैतान उस पर छाया हुआ है। वह गुनाहों को

सजाकर उसके सामने लाता है ताकि इंसान उसमें घिर जाए और तौबा की ढारस बंधाता रहता है ताकि वह उसमें देरी करता रहे।[6]

हज़रत अली[अ०] ने कहा है कि शैतान इन्सान को यह बात समझाता रहता है कि अभी मौत आने में बहुत देर है इसलिए अभी तौबा की क्या ज़रूरत है? बाद में कर लेना, ख़ुदा तो गुनाहों को बख़्शने वाला है ही, बख़्श ही देगा।

1- नहजुल बलाग़ा, हिकमत/150
2- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/94
3- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/81
4- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/28
5- सूरए निसा/119
6- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/62

किस चीज़ से तौबा?

गुनाह कई तरह के होते हैं। कुछ गुनाह छोटे होते हैं जिन्हें गुनाहे सग़ीरा कहते है। और कुछ गुनाह बड़े होते हैं जिन्हें गुनाहे कबीरा कहते हैं। कुछ गुनाहों का ताल्लुक़ सीधे ख़ुदा से होता है जिनको ''हक़्क़ुल्लाह'' यानी ख़ुदा का हक़ कहा जाता है और कुछ गुनाहों का ताल्लुक़ बन्दों से होता है जिनको ''हक़्क़ुन्नास'' यानी बंदों का हक़ कहा जाता है। कभी गुनाह इंसान की सोच और अक़ीदे से जुड़े होते हैं तो कभी अख़्लाक़ी व माली मामलों से। बहरहाल कोई भी गुनाह हो, इसका मतलब यही है कि हक़ीक़त में इंसान ने ख़ुदा के हुक्म को नहीं माना है जिसकी वजह से ख़ुदा हम से दूर हो जाता है। इन्सान को चाहिए कि हर छोटे-बड़े गुनाह से तौबा करे ताकि कल क़यामत में पाक-साफ़ होकर ख़ुदा की बारगाह में हाज़िर हो सके। अगर हम गुनाहों का भारी बोझ लेकर इस दुनिया से जाएंगे तो कल क़यामत में हमारा हिसाब-किताब बहुत सख़्त होगा जिसके बाद हमें ख़ुदा के अज़ाब का सामना भी करना पड़ेगा। अगर हम ने तौबा कर ली तो यह हमारी तौबा क़यामत में पुले सिरात को पार कर जाने के लिए हरी झंडी होगी वरना वह दिन बहुत सख़्त होगा और गुनाहों की सज़ा से किसी भी तरह नहीं बचा जा सकेगा।

हज़रत अली[अ०] ने नहजुल बलाग़ा में कुछ ऐसे गुनाहों को गिनाया है जिन से तौबा करना इन्सान के लिए बहुत ज़रूरी है। अगर क़यामत में हमें इन गुनाहों के बोझ के साथ जाना पड़ा तो हमें बहुत ज़बरदस्त मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा।

इमाम अली[अ०] कहते हैं:

> क़ुरआन में अल्लाह के उन अटल क़ानूनों में से कि जिन पर वह जज़ा व सज़ा देता है और राज़ी व नाराज़ होता है, यह चीज़ भी है कि अगर इंसान इन ख़सलतों में से किसी एक ख़सलत से भी तौबा किये बिना मर जाए तो फिर चाहे वह कितने ही जतन कर डाले दुनिया से निकल कर अल्लाह की बारगाह में जाना उसे ज़रा सा भी फ़ायदा नहीं पहुँचा सकता:
>
> एक यह कि इबादतों में किसी को उसका शरीक बनाया हो, या किसी को हलाक करके अपने गुस्से को ठंडा किया हो, या दूसरे के किये पर ऐब लगाया हो, या दीन में बिदअतें डालकर लोगों से अपना मक़सद पूरा किया हो या लोगों के साथ दोहरी चाल चलता हो, या दो ज़बानों से लोगों से बात करता हो। इस बात को समझ लो क्योंकि एक मिसाल दूसरी मिसाल की दलील हुआ करती है।[1]

यह उन गुनाहों के सिर्फ़ कुछ नमूने हैं यानी यह गुनाह (शिर्क, क़त्ल, ऐब निकालना, मुनाफ़िक़त, चुग़लख़ोरी वग़ैरा) उन गुनाहों में से हैं जिनका बहुत भयानक व ख़तरनाक रिज़ल्ट सामने आएगा। इसलिए इन गुनाहों से तौबा करना बहुत ज़रूरी है। अगर इन गुनाहों से तौबा नहीं की गई तो क़यामत में इन गुनाहों का हिसाब-किताब बहुत सख़्त होगा।

दूसरों पर या ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म उन गुनाहों में से है जिसके बारे में हज़रत अली[अ०] ने कहा है कि इस से भी तौबा करना ज़रूरी है।

इसी तरह शिर्क को भी ऐसा ख़तरनाक ज़ुल्म बताया है जो बख़्शा नहीं जाएगा:

> लेकिन वह ज़ुल्म जो बख़्शा नहीं जाएगा वह

अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराना है।[2]

वह ज़ुल्म जिसकी वजह से इन्सान को रिहाई या निजात नहीं मिल सकती और जिसके बारे में बहुत सख़्त सवाल होगा वह लोगों का एक-दूसरे पर ज़ुल्म करना हैः

> वह ज़ुल्म जिसे अनदेखा नहीं किया जा सकता वह बन्दों का एक-दूसरे पर ज़ुल्म करना है।[3]

हज़रत अली[अ०] एक जगह कहते हैं कि ऐसे गुनाहों पर सज़ा बहुत सख़्त होगी। क़यामत में दूसरे लोगों पर जो ज़ुल्म किया गया है उस पर सिर्फ़ कुछ कोड़े नहीं मारे जाएंग बल्कि उसकी सज़ा और उसका बदला यहाँ से कहीं ज़्यादा सख़्त होगा।

आगे इमाम कहते हैं कि लोगों के बीच किसी में ऐब निकालने, लड़ाई-झगड़े और मुनाफ़िक़त फैलाने से बचो।

इस बारे में इमाम की वसिय्यत यह हैः

> ख़ुश नसीब हैं वह लोग जिनके ऐब उन्हें दूसरों में ऐब और बुराई निकालने से रोक देते हैं। इसी तरह ख़ुश क़िस्मत हैं वह लोग जो अपने घर बैठे अपनी रोज़ी हासिल कर लेते हैं और अपने परवरदिगार की इताअत में लगे हुए हैं और अपने गुनाहों पर रोते हैं।

किसी भी गुनाह को छोटा और मामूली नहीं समझना चाहिए। अगर कोई यह सोचे कि काश मेरे गुनाह इतने ही रहते तो यह ख़ुद एक बहुत बड़ा गुनाह है। दूसरे लफ़्ज़ों में यह ख़ुदा की अज़्मत और उसके हुक्म की बुलंदी को नीचा समझना है।

हज़रत अली[अ०] कहते हैंः

> तुम में से कोई भी अल्लाह के सिवा किसी से उम्मीद न लगाए और उसके गुनाह के अलावा किसी चीज़ से न डरे।[4]

1- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/151, 2- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/174
3- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/174, 4- नहजुल बलाग़ा, हिक्मत/82

तौबा के रास्ते में आने वाली रूकावटें

अक़्ल और दिल के दोराहे पर पहुँचने के बाद अक़्ल को कसौटी बनाकर उसके हिसाब से आगे बढ़ने और अपनी दुनियावी ख़्वाहिशों को अपने क़दमों तले कुचल देने के लिए बड़े हौसले और हिम्मत की ज़रूरत होती है।

इन्सान को दुनिया और आख़िरत में गुनाहों से मिलने वाली ज़िल्लत व रुस्वाई के बारे में अगर थोड़ा-बहुत भी एहसास हो तो वह बड़ी आसानी से तौबा के रास्ते पर चल पड़ेगा और अपने गुनाहों से तौबा करने के लिए तैयार हो जाएगा। इसी तरह अगर एक इन्सान अपनी उम्र की तरफ़ भी ध्यान देता हो और अपनी ज़िन्दगी के दिनों को एक बहुत जल्दी गुज़र जाने वाला वक़्त मानता हो तो किसी भी हाल में तौबा करने में देरी नहीं करेगा।

अब आईए! उन चीज़ों के बारे मे बात करते हैं जो तौबा में रूकावट बन जाती हैः

1- लम्बी-लम्बी ख़्वाहिशें

ख़्वाहिशों और अरज़ूओं का लम्बा होना तौबा की रूकावटों में से एक रूकावट है। जो इंसान यह समझता है कि वह बहुत ज़्यादा दिनों तक इस दुनिया में ज़िन्दा रहेगा और आगे चल कर किसी अच्छे वक़्त पर अपने गुनाहों से तौबा कर लेगा तो यह उसकी भूल है क्योंकि अगर अचानक तौबा का यह मौक़ा और फ़ुरसत की यह घड़ी ख़त्म हो जाती है और देखते ही देखते ज़िन्दगी का चिराग़ बुझ जाता है जिसके बाद कुछ नहीं हो सकता।

हज़रत अली[अ०] ने इस बारे में भी हमें ख़बरदार किया हैः

> तुम को उन लोगों के जैसा नहीं होना चाहिए जो अमल के बिना अच्छे अंजाम की उम्मीद रखते हैं और उम्मीदें बढ़ाकर तौबा में देरी करते हैं।[1]

2- गुनाह से मिलने वाला मज़ा

तौबा से दूर रहने की दूसरी वजह गुनाहों से मिलने वाला ''मज़ा'' है। अगर इन्सान इस सच्चाई को समझ ले कि गुनाहों से मिलने वाली लज़्ज़त व मज़ा वक़्ती और बहुत जल्दी गुज़र जाने वाला है जिसका अज़ाब हमेशा बाक़ी रहने वाला है तो वह यक़ीनी तौर पर इन शैतानी लज़्ज़तों और चटख़ारों से मुँह मोड़ कर ख़ुदा की इताअत व उसकी बन्दगी के रास्ते पर चल पड़ेगा।

नहजुल बलाग़ा में इस बारे में लिखा हैः

> इन दोनों तरह के अमलों में कितना फ़र्क़ हैः एक वह अमल जिसकी लज़्ज़त मिल जाए लेकिन उसका जंजाल रह जाए और एक वह जिसकी सख़्ती ख़त्म हो जाए लेकिन उसका अज्र व सवाब बाक़ी रहे।[2]

हज़रत अली[अ०] कहते हैंः

> याद रखो! अल्लाह की हर इताअत मुश्किल दिखती है और हर गुनाह ख़्वाहिश बनकर सामने आता है। ख़ुदा उस पर रहमत करे जिसने ख़्वाहिशों से दूरी की और अपनी ख़्वाहिशों को जड़ से उखाड़ दिया।[3]

3- गुनाहों की बुराई का एहसास न होना

तौबा न करने या उसमें देरी करने की एक और वजह गुनाहों की ख़राबी की जानकारी न होना है। शैतान का धोखा

और उसका फ़रेब इतना असरदार होता है कि गुनाहगार इन्सान अपने गुनाहों की बुराई व ख़राबी को समझ ही नहीं पाता बल्कि इसके उलट गुनाह उसे बड़े ख़ूबसूरत और मज़ेदार लगने लगते हैं। जो लोग खाने की किसी चीज़ से होने वाले नुक़सान और उसकी वजह से जिस्म के अन्दर पैदा होने वाली बीमारियों को नहीं जानते, वह देखते ही उस चीज़ पर टूट पड़ते हैं और ज़ाहिरी मज़े की वजह से अपना पेट गले तक भर लेते हैं जिसका नुक़सान बाद में ख़ुद भुगतते हैं या एक ऐसा इन्सान जिसे सिग्रेट से होने वाले नुक़सान का एहसास न हो, उसे सिग्रेट पीने में बड़ा मज़ा आता है, जबकि सच यह है कि वह ख़ुद ही अपने इस काम से अपनी सेहत और तन्दुरुस्ती को बर्बाद कर रहा होता है।

गुनाहों से होने वाला नुक़सान भी इन्सान की रूह और उसकी शख़्सियत के लिए ऐसा ही है। उसे इसके नुक़सान का पता ही नहीं होता, इसलिए वह गुनाहों के नशे में डूब जाता है और गुनाह करके एक ख़ास मज़े का एहसास करता है, जिसकी वजह से तौबा करके निजात पाने की उसे फ़िक्र ही नहीं होती।

4– गुनाहों को छोटा आंकना

तौबा न कर पाने की एक दूसरी वजह गुनाहों को छोटा समझना भी है। अल्लाह हमारा पैदा करने और पालने वाला है, उसकी बारगाह में कोई भी गुनाह किया जाए, उस गुनाह का छोटा या बड़ा होना मायनी नहीं रखता।

हदीसों में कहा गया है कि छोटे गुनाह को छोटा समझना गुनाहे कबीरा है और ऐसा इसी लिए कहा गया है क्योंकि ऐसा करना अल्लाह की अज़्मत को अंदेखा करने की निशानी है।

हज़रत अली[अ०] कहते हैंः

सबसे भारी गुनाह वह है जिसको करने वाला

उसे हल्का समझे।[4]

अगर कोई एक ऐसे ख़तरनाक फोड़े को मामूली समझ बैठे जो अभी पूरी तरह से उभरा नहीं है तो आख़िर में उसे कितनी तकलीफ़ झेलना पड़ेगी यह तो बस वही जानता है।

कोई भी गुनाह हो वह हमारी रूह के लिए बिल्कुल फोड़े की तरह होता है। इसलिए जितनी जल्दी हो सके तौबा करके उसका इलाज कर लेना चाहिए ताकि हमारी रूह को बाद में कोई ख़तरा न हो।

5– ख़ुदा की रहमत से मायूसी

तौबा न कर पाने की एक और वजह यह है कि कभी–कभी गुनाहगार इन्सान यह सोचने लगता है कि अब मैं सीधे रास्ते पर वापस नहीं आ सकता। इसलिए तौबा करने से फ़ायदा क्या? बिल्कुल उन मरीज़ों की तरह जो अपनी बीमारी को ला इलाज समझ लेते हैं। इसलिए वह इस तरफ़ सोच ही नहीं पाते। गुनाहों और शैतान के चंगुल से आज़ादी की उम्मीद उनके दिल से ख़त्म हो जाती है। हदीसों में तौबा पर इसीलिए इतना ज़ोर दिया गया है और ख़ुदा की मग़फ़िरत व बख़्शिश के वादे का ध्यान इसीलिए दिलाया गया है ताकि हमारे दिल से यह नाउम्मीदी और मायूसी दूर हो जाए।

हज़रत अली[अ०] ने इस बारे में कहा है:

> जो दुआ करे वह क़ुबूलियत से महरूम नहीं होता। जिसे तौबा की तौफ़ीक़ हो वह दुआ के क़बूल होने से नाउम्मीद नहीं होता। जिसे इस्तेग़फ़ार करना नसीब हो जाए वह मग़फ़िरत से महरूम नहीं होता।[5]

क्या यह हो सकता है कि ख़ुदा अपने बन्दे से मग़फ़िरत का वादा करे और उसे तौबा की तरफ़ बुलाए लेकिन जब उसका बन्दा शर्मिंदा होकर अपने गुनाहों से तौबा करे और उसकी बारगाह का चक्कर लगाए तो वह ख़ुदा उसे

अपने दरवाज़े से भगा दे ?!

हज़रत अली[अ०] दूसरी जगह यूँ कहते हैं:

> ऐसा नहीं कि अल्लाह किसी बन्दे के लिए शुक्र का दरवाज़ा खोले और नेमतों का दरवाज़ा बन्द कर दे या किसी बन्दे के लिए दुआ का दरवाज़ा खोले और क़ुबूलियत का दरवाज़ा बन्द रखे या किसी बन्दे के लिए तौबा का दरवाज़ा खोले और मग़फ़िरत का दरवाज़ा बन्द कर दे।[6]

6– ग़ुरूर और तकब्बुर

तौबा न करने की एक और वजह ग़ुरूर व तकब्बुर का होना है। यह तो हम अब तक जान ही चुके हैं कि तौबा शर्मिंदगी, पछतावे, कमज़ोरी, ख़ुदा की बारगाह में मग़फ़िरत की दरख़्वास्त करने और गुनाह न करने के वादे पर डटे रहने का नाम है। उधर मग़रूर इंसान शैतान की तरह ग़ुरूर व तकब्बुर में डूबा रहता है जिसकी वजह से ख़ुदा की बारगाह से निकाल दिया जाता है।

अगर कोई किसी ज़बरदस्ती की वजह से अपनी शर्मिंदगी या पछतावे का इज़हार करता है या बेदिली के साथ ख़ुदा से माफ़ी मांगता है तो यह ख़ुद एक तरह से शैतान के जाल में आना है, यानी शैतान इसी तरह से इन्सान को गुनाहों के दलदल में ढकेल देता है।

हज़रत अली[अ०] ने बार–बार इस बात पर ज़ोर दिया है कि पिछले लोगों के हालात को पढ़कर उन से सबक़ लेकर होश में आओ और ख़ुदा की तरफ़ मुंह मोड़ लो:

> लज़्ज़तों के ख़त्म होने और जज़ा व सज़ा के बाक़ी रहने को याद रखो।[7]

बहरहाल यह माफ़ी व बख़्शिश के यह सारे मौक़े, मग़फ़िरत व रहमत के वादे और तौबा करने वाले गुनाहगार

इन्सानों के लिए निजात और उम्मीद के रास्ते ख़ुदा की तरफ़ से मौजूद हैं। अब अगर इसके बाद भी माँगने वाला काहिल और सुस्त हो तो इसमें देने वाले की क्या ग़लती है ?!

हज़रत अली[अ०] कहते हैंः

> उस इंसान पर ताज्जुब होता है जो तौबा की गुन्जाइश के होते हुए भी मायूस हो जाए।[8]

वह लोग जो इल्म व अक़्ल और ख़ुदा की मारेफ़त के साथ-साथ हिम्मत व हौसले वाले हैं वह बन्दगी के इस रास्ते पर चलते हुए ऊपर लिखी हुई तौबा के सामने आने वाली रूकावटों के ऊपर पूरी तरह से कंट्रोल पा लेते हैं और शैतान के हर फ़रेब व हर हमले को नाकाम बना देते हैं।

1- नहजुल बलाग़ा, हिकमत/150
2- नहजुल बलाग़ा, हिकमत/121
3- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/174
4- नहजुल बलाग़ा, हिकमत/348
5- नहजुल बलाग़ा, हिकमत/135
6- नहजुल बलाग़ा, हिकमत/435
7- नहजुल बलाग़ा, हिकमत/433
8- नहजुल बलाग़ा, हिकमत/87

तौबा से ज़्यादा आसान रास्ता

''परहेज़, इलाज से बेहतर होता है'' यह फ़ार्मूला अख़लाक़ और परवरिश के बारे में भी 100% सही है। अगर कोई बेधियानी या अपनी सेहत का ख़याल न रखने की वजह से किसी बीमारी का शिकार हो गया है तो उसका हल यह है कि वह किसी डॉक्टर के पास जाए लेकिन कभी-कभी ऐसा भी होता है कि इलाज काफ़ी मेंहगा और भारी ख़र्चे वाला होता है और कभी यह भी हो सकता है कि बीमारी के ख़त्म होने के बाद उस इलाज का कोई साइड इफ़ेक्ट सामने आ जाए जो उम्र भर बाक़ी रहे। इसलिए ऐसे हालात में सब से अच्छा तरीक़ा और सब से अच्छा इलाज परहेज़ और डॉक्टर के बताए उसूलों की पाबंदी करना है जिसमें सहूलत और ख़र्चा कम होने के साथ कोई नुक़सान और रिएक्शन भी नहीं होता।

यह बात सही है और इसमें कोई शक भी नहीं है कि हमारे मेहरबान पालने वाले ने अपने गुनाहगार बन्दों के लिए सारे रास्ते बन्द नहीं किए हैं यानी ऐसा नहीं है कि अगर इंसान गुनाह कर बैठे तो बस अब सब कुछ ख़त्म बल्कि तौबा के नाम का एक दरवाज़ा हर वक़्त खुला रखा है, जिसका जब दिल चाहे तौबा कर सकता है। लेकिन क्या सारे गुनाहगार इंसानों को इस बात का ध्यान है कि जो उन्होंने बुराईयाँ और ग़लतियाँ की हैं उन से उन्हें तौबा कर लेना चाहिए ?

क्या शैतान उन्हें इतनी आसानी से छोड़ देगा कि वह उसके चंगुल से आज़ाद हो जाएं और दोबारा उसके जाल में न फंसें ?!

और अगर उन्होंने तौबा कर भी ली तो क्या उनकी तौबा में इतना दम होगा जो उनके सारे गुनाहों को साफ़ कर दे ?!

सब से बड़ा सवाल यह है कि अगर तौबा की तौफ़ीक़

ही नहीं मिल सकी तो फिर क्या होगा ?!

यही वह बातें हैं जिनकी वजह से कहा जाता है कि परहेज़ करना इलाज से अच्छा और ज़्यादा आसान है, यानी इन्सान सिरे से गुनाह ही न करे।

हज़रत अली[अ०] कहते हैंः

> गुनाह को छोड़ देना बाद में मदद माँगने से आसान है।[1]

जो चीज़ इस बारे में इन्सान को हिम्मत और ताक़त देती है वह है इन्सान का अपने ऊपर कंट्रोल पाना और अपनी ख़्वाहिशों पर क़ाबू पाना।

इन्सान को चाहिए कि अपना कंट्रोल अपने हाथ में रखे और अपने दिल को ख़ुदा की इताअत की तरफ़ मोड़ दे, न यह कि अपनी ख़्वाहिशों पर सवार होकर अंधाधुंध जिधर चाहे मुंह उठाए चला जाएः

> वह इन्सान जिसे एक ख़ास वक़्त तक उम्र दी गई है और अमल करने के लिए छूट भी मिली है, उसे अल्लाह से डरना चाहिए। मर्द वह है जो अपने नफ़्स को लगाम देकर और उसकी बागें चढ़ाकर अपने क़ाबू में रखे और लगाम के ज़रिए उसे अल्लाह की नाफ़रमानियों से रोके और उसकी बागें थाम कर अल्लाह की इताअत की तरफ़ उसे खींच ले जाए।[2]

यही वह रास्ता है जिस पर चलकर यानी अपने दिल को कन्ट्रोल करके गुनाहों से बचा जा सकता है ताकि तौबा की नौबत ही न आए। और यह काम बहुत आसान भी है यानी ऐसा किया जा सकता है।

1- नहजुल बलाग़ा, हिकमत/170

2- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/234

मग़फ़िरत के कुछ और दूसरे तरीक़े

हम जान चुके हैं कि तौबा की कुछ ज़रूरी शर्तें हैं, जैसे गुनाहों पर शर्मिन्दगी व पछतावा, दोबारा गुनाह न करने का इरादा, ताकि मग़फ़िरत मांगने और ज़बानी इस्तेग़फ़ार का रास्ता आसान हो जाए। उधर ख़ुदा ने भी तौबा को क़ुबूल करने और गुनाहों से मग़फ़िरत का वादा किया है।

लेकिन हज़रत अली[अ०] ने इसके अलावा कुछ और दूसरे तरीक़े भी बताए हैं जिन पर चलकर तौबा और मग़फ़िरत की जा सकती है। वह तरीक़े यह हैंः

1– नमाज़ की अदाएगी और उसकी पाबन्दी

हज़रत अली[अ०] कहते हैंः

> नमाज़ की पाबन्दी करो, उसकी हिफ़ाज़त करो, उसे ज़्यादा से ज़्यादा बजा लाओ और इसके ज़रिए से अल्लाह से क़रीब होने की दुआ करो क्योंकि नमाज़ मुसलमानों पर वक़्त की पाबन्दी के साथ वाजिब की गई है। क्या (क़ुरआन में) जहन्नमियों के जवाब को तुम ने नहीं सुना कि जब उन से पूछा जाएगा कि कौन सी चीज़ तुम्हें जहन्नम की तरफ़ खींच लाई है तो वह कहेंगे कि हम नमाज़ी नहीं थे। बेशक नमाज़ गुनाहों को झाड़ कर इस तरह अलग कर देती है जिस तरह (पेड़ से पत्ते झड़ते हैं और उन्हें इस तरह अलग करती है जिस तरह (जानवरों की गर्दनों से) फंदे खोलकर उन्हें आज़ाद किया जाता है। रसूल[स०] ने नमाज़ की मिसाल उस गर्म चश्मे से दी है जो किसी के घर के दरवाज़े पर हो और वह उसमें

> दिन-रात पाँच बार ग़ुस्ल करे तो क्या उसके जिस्म पर किसी तरह के मैल के रह जाने की उम्मीद की जा सकती है ?[1]

2- गुनाहों को छोड़ देना

गुनाहों से बचना और अपने आपको गुनाहों की गंदगी से दूर रखना ख़ुद एक तरह की तौबा है जिसे एक नेक अमल के तौर पर माना गया है जिसके ऊपर सवाब भी बहुत ज़्यादा है।

हज़रत अली[अ०] कहते हैं:

> उसने गुनाह से दूर हो जाने को भी एक नेकी बताया है और बुराई एक हो तो उसे एक (बुराई) और नेकी एक हो तो उसे दस (नेकियों) के बराबर ठहराया है।[2]

3- अच्छे काम करना

हज़रत अली[अ०] कहते हैं:

> छुप कर ख़ैरात किया करो क्योंकि वह गुनाहों का कफ़्फ़ारा है।[3]

एक दूसरी जगह इमाम कहते हैं:

> किसी परेशान इंसान की दाद-फ़रियाद सुनना और मुसीबत में फंसे हुए को मुसीबत से छुटकारा दिलाना बड़े-बड़े गुनाहों का कफ़्फ़ारा है।[4]

4- बीमारी को बर्दाश्त करना

बहुत सी हदीसों में लिखा है कि कई बार इन्सान की बीमारी ख़ुदा की तरफ़ से एक तोहफ़ा होती है ताकि ख़ुदा उस बीमारी के ज़रिए गुनाहों को बख़्श दे और आख़िरत के लिए

गुनाह उसकी गर्दन पर बाक़ी न रहे। ऐसी हालत में अगर कोई मरीज़ ख़ुदा से मिलने वाले बदले की उम्मीद में अपनी बीमारी को बर्दाश्त कर ले तो इससे उसके गुनाह पाक हो जाते हैं।

नहजुल बलाग़ा में हम देखते हैं कि हज़रत अली[अ०] बीमारी की तकलीफ़ से कराहने और तड़पने वाले इंसान के बारे में कहते हैंः

> अल्लाह ने तुम्हारी बीमारी को तुम्हारे गुनाहों को दूर करने का ज़रिया बताया है क्योंकि ख़ुद बीमारी का कोई सवाब नहीं है। हां! यह ज़रूर है कि वह गुनाहों को मिटाती है और उन्हें इस तरह झाड़ देती है जिस तरह पेड़ से पत्ते झड़ते हैं।[5]

बहरहाल हमें चाहिए कि हमेशा ख़ुद को नेक कामों, ख़ुदा की याद, उसके ज़िक्र, उसकी इताअत व बन्दगी से जोड़े रखें ताकि ख़ुदा गुनाहगार बन्दों को अपने करम के साए में परवान चढ़ाए और उनके गुनाहों को सिरे से मिटा दे।

1- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/197
2- नहजुल बलाग़ा, ख़त/31
3- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/108
4- नहजुल बलाग़ा, हिकमत/23
5- नहजुल बलाग़ा, हिकमत/42

हो सकता है कि यही बेहतर हो

आख़िरी बात यह है कि ख़ुदा यह नहीं चाहता कि हम और आप गुनाहों और बुराईयों में घिरे रहें और हमें इसलिए पैदा भी नहीं किया गया है। अगर हम गुनाहों के जंगल में यूं ही परेशान भटकते रहें तो यह ख़ुद हमारी कमी और अपने पैदाइशी नेचर से दूर होने का नतीजा है। अगर हम चाहें तो तौबा की सीढ़ियों के ज़रिए ख़ुद को दिल और रूह की पाकीज़गी की ऊंचाईयों तक पहुँचा सकते हैं।

गुनाह की शुरूआत एक चिंगारी की तरह होती है और यह चिंगारी धीरे-धीरे शोला बन जाती है।

इसलिए हमें चाहिए कि इस चिंगारी के बनने से पहले ही इसे बुझा दें वरना इसके शोले सूखी जड़ों को जलाकर राख कर देंगे और फिर उसे हवा में उड़ा देंगे।

फिर तो सब कुछ हो सकता है! ख़ुदा करे ऐसा न हो और बिल्कुल ऐसा न हो, बिल्कुल भी।

वैसे यह भी हो सकता है कि दोबारा इस अंधेरे में सुबह की रौशनी नज़र आ जाए।

हो सकता है कि सितारों के निकलने से रात का अंधेरा छट जाए और हमें अपनी मंज़िल तक पहुँचने का रास्ता मिल जाए।

हो सकता है कि तौबा के दोनों हाथों से गुनाहों की सलाख़ें टूट जाएं।

हो सकता है कि दुआ व मग़फ़िरत की नूरानियत से गुनाहों का अंधेरा छट जाए।

ख़ुदा करे तौबा का शौक़ हमें तौबा के ख़ुबसूरत गुलशन की तरफ़ खींच ले और हमारे दिलों में ख़ुदा की रहमत की उम्मीद का चिराग़ रौशन हो जाए!

ख़ुदा कौन है? क्या है? कैसा है?

ख़ुदा इस वक़्त कहाँ है ? वह किस चीज़ से बना है ? ख़ुदा से पहले क्या था ?

हमारे पहले इमाम हज़रत अली[अ०] ने अल्लाह के वुजूद के बारे में बड़े ख़ूबसूरत अन्दाज़ में खुलकर इन बातों का जवाब दिया है।

कुछ लोगों ने इमाम अली[अ०] से सवाल किया कि आपका ख़ुदा कब, किस साल में और किस तारीख़ को पैदा हुआ ?

इमाम[अ०] ने फ़रमाया, ''अल्लाह तआला तारीख़ और ज़माने से पहले भी मौजूद था।''

लोगों ने कहा, ''यह कैसे हो सकता है क्योंकि हर चीज़ किसी दूसरी चीज़ से पैदा होती है या कुछ और बनती है।''

इमाम[अ०] ने उन से सवाल किया, ''3 से पहले आता क्या है ?''

लोगों ने जवाब दिया, ''2''।

इमाम[अ०] ने पूछा, ''2 से पहले कौन सा नम्बर आता है ?''

उन्होंने जवाब दिया, ''1''।

इमाम[अ०] ने फिर पूछा, ''1 से पहले ?''

उन्होंने जवाब दिया, ''कोई नम्बर नहीं।''

इमाम[अ०] ने कहा, ''यह कैसे हो सकता है कि एक नम्बर के बाद तो बेशुमार नम्बर हों और इस से पहले कोई नम्बर न हो लेकिन अल्लाह तआला जो एक है और उसके जैसा कोई नहीं है, उस से पहले ज़रूर कोई चीज़ मौजूद हो ?!''

लोगों ने कहा, ''आपका ख़ुदा कहाँ है ? और किस जगह रहता है ?''

इमाम ने कहा, ''वह हर जगह मौजूद है और हर चीज़ पर छाया हुआ है।''

उन्होंने कहा, ''यह कैसे हो सकता है कि हर जगह मौजूद हो और हर चीज़ पर छाया हुआ हो ?''

इमाम अली[अ०] ने कहा, ''मान लो कि तुम लोग एक अंधेरी जगह पर सोए हुए हो। जब सुबह में जागोगे तो दिन की रौशनी कहाँ और किस तरफ़ से आती हुई देखोगे।''

सब ने कहा, ''हर जगह और हर तरफ़ से।''

इमाम ने कहा, ''तो फिर वह ख़ुदा जो ख़ुद ज़मीन और आसमान का नूर है हर जगह और हर तरफ़ क्यों नहीं हो सकता ?!''

इस पर उन्होंने कहा, ''यानी ख़ुदा नूर से है लेकिन नूर तो सूरज से है। फिर आपका ख़ुदा किस नूर से है ?!

यह कैसे हो सकता है कि किसी चीज़ से न हो लेकिन हर जगह मौजूद हो और क़ुदरत भी रखता हो ?!''

इमाम अली[अ०] ने कहा, ''ख़ुदा ख़ुद रौशनी का पैदा करने वाला है। क्या तुम ने तूफ़ान और हवा की ताक़त को नहीं देखा है ? हवा किस चीज़ से बनती है जो न देखी जा सकती है और न वह किसी चीज़ से बनती है, जबकि उसमें ताक़त भी बहुत ज़्यादा होती है। ख़ुदा तो ख़ुद हवा का बनाने वाला है।''

उन्होंने कहा, ''हमें अपने ख़ुदा की सिफ़त बताइए कि वह किस चीज़ से बना हुआ है ? क्या लोहे जैसा सख़्त है या बहते हुए पानी जैसा है ? या गैस जैसा है या धुंआँ और भाँप जैसा है ?''

हज़रत अली[अ०] ने कहा, ''क्या आज तक कभी तुम लोग किसी मरते हुए बीमार के पास बैठे हो ? और उसके साथ बातें की हैं ?''

सब ने जवाब दिया, ''जी हाँ! हम ऐसे बीमार के पास बैठे हैं और उस से बातें भी की हैं।''

इमाम ने कहा, ''उसके मरने के बाद भी उसके साथ बातें की हैं ?''

कहा, ''नहीं! ऐसा हो भी नहीं सकता क्योंकि मरे हुए इन्सान से बातें नहीं की जा सकतीं।''

इमाम ने कहा, ''मुर्दा और ज़िन्दा होने में क्या फ़र्क़ है कि जिसके बाद इन्सान बात भी नहीं कर सकता।''

उन्होंने कहा, ''जब बदन से रूह निकल जाती है तो फिर इन्सान कुछ भी नहीं कर सकता।''

इमाम ने कहा, ''तुम कह रहे हो कि मरते हुए इन्सान के सिरहाने मौजूद थे और यह भी कहते हो कि रूह उसके बदन से निकल गई तो वह मर गया। अब उस रूह को जिसे तुम ने अपनी आँखों के सामने निकलते हुए देखा है, ज़रा मुझे उसकी सिफ़त बताओ कि वह किस चीज़ से बनी थी और कैसी थी ?''

यह सुनकर सब ख़ामोश हो गए।

इमाम अली[अ०] ने कहा, ''तुम उस रूह की सिफ़त नहीं बता सकते जिसको तुम ने ख़ुद अपनी आँखों से बीमार इन्सान के बदन से निकलते हुए देखा है तो उस रूह के पैदा करने वाले को समझने और जानने की ताक़त कहाँ से लाओगे ?''

(किताब तौहीदे नज़री, हुज्जतुल इस्लाम शायान)